thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 32
सृष्टि संवत् 1960853115
16 नवम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 32, 13/16 नवम्बर 2014 तदनुसार 1 मार्गशीर्ष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सारा जहान तेरा निशान

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि।।

-ऋ. 9/76/5

शब्दार्थः हे **विश्वचक्षः** =सर्वद्रष्टः ! सर्वज्ञ प्रभो ! **विश्वा**= सब **धामानि** = लोगों को **ऋभ्वसः**= प्रकाशकों के प्रकाशक **सतः** = होते हुये **ते** = तुझ **प्रभोः**= प्रभु के **केतवः**=केतु **परि+यन्ति**= सब ओर से प्राप्त हो रहे हैं। हे **सोम**= शान्ति प्रदान करने वाले भगवन् ! तू **व्यानशिः** = विशेष रूप से निरन्तर व्यापक होता हुआ **धर्मभिः**= नियमों से **पवसे** = पवित्र करता है और **विश्वस्य**= सम्पूर्ण **भुवनस्य** = संसार का **पतिः**= पालक, स्वामी होकर **विराजसि** = विराज रहा है।

व्याख्या= लोग भगवान का स्थान तथा निशान पूछते हैं, वेद कहता है कि भगवान प्रभु है, सब स्थानों में उत्तम रीति से रहते हैं, प्रकाशकों के प्रकाशक हैं, अतएव विश्वचक्षः हैं, अतः उनका निशान सारा जहान है। जहां कोई रहता है, वहीं उसका निशान होता है। भगवान् सर्वत्र विद्यमान हैं, अतः उसका सर्वत्र निशान है अर्थात जहां चाहो भगवान के दर्शन कर लो, थोड़ा सा प्रयत्न करने की आवश्यकता है। सर्वत्र है तो दीखता क्यों नहीं?

निःसन्देह मार्मिक प्रश्न है, किन्तु क्या सभी वस्तुएं सदा दिखाई देती हैं? आपकी पीठ पर क्या है? आप लाहौर बैठे हैं, अमृतसर आपको दिखाई नहीं देता, अतः क्या अमृतसर नहीं है?

नहीं ऐसी बात नहीं है। पीठ पर आंख जाती नहीं। अमृतसर दूर है, अतः दिखाई नहीं देता।

तो ज्ञात हुआ कि पदार्थ होते हुये भी किसी कारण विशेष से दृष्टिगोचर नहीं होते। दूर होने से, रूकावट होने से, अत्यन्त समीप होने से, एक समान पदार्थों में रल-मिल जाने से, अत्यन्त सूक्ष्म होने से, अत्यन्त महान् होने से विद्यमान पदार्थ दिखाई नहीं दिया करते। जैसे आंख सब को देखती है, किन्तु आंख में पड़े सुरमे को नहीं देख पाती, क्योंकि वह अत्यन्त समीप है। परमाणु की सत्ता युक्ति प्रमाण से सिद्ध है किन्तु अति महान होने के कारण वह आज तक किसी को दिखाई नहीं दिया। अमृतसर दूर होने से दिखाई नहीं देता। दीवाल के पीछे पड़ी वस्तु रूकावट के कारण दिखाई नहीं देती। सरसों का एक दाना सरसों के ढेर में मिला दो, फिर वह हाथ नहीं आता, एक जैसों में मिल कर दिखाई नहीं देता। दूध-दही में घृत है, दिखाई नहीं देता।

इसी भान्ति परमात्मा अति महान् है। जैसा कि वेद में कहा है- **एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरूषः।** यजुः 31/3 यह सारा जहान भगवान की महिमा है, वह व्यापक प्रभु तो इससे बहुत बड़ा है।

अतः ये आंखें उसे नहीं देख सकतीं। सबमें सभी सत्पदार्थों में-ओत प्रोत है, अतः दिखाई नहीं देता। अत्यन्त सूक्ष्म हैं, जैसा कि उपनिषत् ने कहा- **अणोरणीयान्**- सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, अतः आंखों की पहुंच से बाहर है। अति समीप है।

आत्मास्य जनतोर्निहितो गुहायाम्। कठो.1/2/20 इस प्राणी का जीवात्मा का, आत्मा, अर्थात् अन्तरात्मा परमात्मा हृदयगुहा में छिपा है। आत्मा-परमात्मा एक स्थान में रहते हैं, अतः अत्यन्त समीप होने से इसे दिखाई नहीं दे रहा। आंख में भी व्यापक है, अति समीप होने से आंख इसे नहीं देख पाती।

अज्ञानियों से वह दूर है, कठिनता से प्राप्त होता है। वेद कहता है- तद्दूरे तद्वन्तिके।

वह दूर है, वह सचमुच समीप है। जैसे अति दूर आदि पदार्थों को देखने के लिये प्रयत्न विशेष करना पड़ता है, ऐसे ही वह अतिसूक्ष्म, अतिमहान्, अतिदूर, अज्ञानावरण के कारण न दीखने वाला, सभी पदार्थों में ओत प्रोत विभु प्रभु प्रयत्न विशेष से प्रत्यक्ष होता है। यत्न करने की आवश्यकता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

इन्हीं तीनों एषणाओं का परिगणन उक्त मंत्र में प्रजाम्, द्रविणम् और कीर्तिम् कहकर किया गया है। एषणात्रय तो वर रूप में मिलेंगे ही, परन्तु जिसके बिना सब व्यर्थ है, वह जीवन भी वर में मिलेगा और सर्वप्रथम मिलेगा। इसीलिए आयु और प्राण की गणना सर्वप्रथम कराई गई है।

यदि मनुष्य जीवित रहे, तो अनेक मंगलों-सुखों को देखता है, जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति। व्यक्ति का जीवन ही समाप्त हो जाए तो पुत्र, द्रविण और कीर्तिरूप भद्र प्राप्त करके भी वह क्या करेगा ? जीवन का महत्त्व सर्वोपरि है और इसलिए इन दोनों मंगलों की गणना सर्वप्रथम कराई गई है-आयु तथा प्राण। और सबके अन्त में ब्रह्मवर्चस् की गणना की गई है जिसे शतपथकार ने स्वाध्याय का फल बताते हुए, ब्रह्मण्यता प्राप्त होना लिखा है और जिसे राजर्षि मनु ने "स्वाध्यायेन....ब्राह्मीयं क्रियते तनुः" कहा उसे ही भगवती श्रुति ने ब्रह्मवर्चसम् उद्घोषित किया है। राष्ट्रगीत में पढ़ा जाता है-**आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।** (यजु० २२.२२)

इस प्रकार वेद ने स्वयं वेदों के स्वाध्याय का फल बताते हुए इहलोक के मंगलों में उन सभी इच्छाओं को समेट लिया है, जो व्यक्ति के मन में उठ सकती हैं, वे क्रमशः सात हैं-

1. आयु, 2. प्राण, 3. प्रजा, 4. पशु, 5. कीर्ति, 6. द्रविण (धन), 7. ब्रह्मवर्चस् ब्रह्म-तेज।

ब्रह्मलोक-स्वाध्याय से न केवल उक्त ऐहलौकिक मंगल ही मिलेंगे, अपितु पारलौकिक, सर्वोपरि-मंगल भी प्राप्त होगा, ब्रह्मलोक, परमात्म-साक्षात्कार। इस प्रकार इहलोक के सात मंगलों और परलोक के एक मंगल को मिलाकर आठ मंगलों में ही व्यक्ति की समस्त कामनाओं का समावेश हो गया है। इस प्रकार स्वयं भगवती श्रुति ने ही वेद के स्वाध्याय और प्रवचन के उक्त आठ लाभ दर्शाए और शतपथ एवं मनु आदि ने उन्हें पल्लवित किया। निष्कर्ष यह कि वेदाज्ञा समझकर मनुष्य को स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

इसी बात को तैत्तिरीयोरण्यक २।१०।१३ में इस प्रकार कहा है कि जो व्यक्ति स्वाध्याय-यज्ञ में नित्य ऋचारूप आहुतियां देता है, देवजन उसके इस ब्रह्मयज्ञ से प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार में जो वर देते हैं, वे दीर्घ आयु, दीप्ति (चमक, तेज) सम्पत्ति, यश, आध्यात्मिक उच्चता और भोजन हैं। सभी शास्त्रों ने स्वाध्याय की महिमा में उसके फलों का प्रायः एक सा ही वर्णन किया है। सिद्ध हुआ कि स्वाध्याय फल लाभ की दृष्टि से भी करना चाहिए।

5. स्वाध्याय द्वारा कर्त्तव्य बोध

यह लोक, यह समाज, व्यक्ति के आश्रित चलता है और व्यक्ति का समुचित निर्माण समाज के आश्रित है, अतः एक-दूसरे के प्रति दोनों के कुछ परस्पर कर्त्तव्य हैं। व्यक्ति लोक और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझकर कुछ न कुछ अर्जित करे और उस अर्जित फल को पुनः समाज के प्रति समर्पित कर दे।

अय-आय-न्याय-अध्याय-व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह कुछ न कुछ सेवन करे। वह सवन चार प्रकार है-प्रथम अय, द्वितीय आय, तृतीय न्याय, चतुर्थ अध्याय।

राष्ट्र में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अय का सवन करते हैं और राष्ट्र के प्रति अय का दान करते हैं, वे शूद्र कहलाते हैं। कुछ व्यक्ति आय का सवन करते हैं और राष्ट्र के प्रति आय दान करते हैं, ये वैश्य कहाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो न्याय का सवन करते हैं और राष्ट्र के प्रति न्याय दान कर देते हैं, वे क्षत्रिय कहाते हैं और कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अध्याय का सवन करते हैं और राष्ट्र के प्रति अध्याय दान करते हैं, वे ब्राह्मण कहाते हैं। अर्थात् शूद्र अय दान करके, वैश्य आय दान करके, क्षत्रिय न्याय दान करके और ब्राह्मण अध्याय दान करके राष्ट्र, समाज और लोक को समृद्ध और सशक्त बनाते हैं।

महादान-शूद्र अय-दान से समाज को गति देता है। अय का अर्थ ही गति है। यह दान कम महत्त्व का नहीं। राष्ट्र जिसके कारण गतिशील होता है, चलता है, वह दान भी महत्त्वपूर्ण है।

वैश्य आय दान से समाज को स्थिति प्रदान करता है। स्थिति के बिना गति असम्भव है। व्यक्ति अथवा समाज की स्थिति आय के आश्रित है और इसका दान करके वह पुण्य का भागी बनता है।

क्षत्रिय न्याय-दान से समाज को कृति प्रदान करता है। जब व्यक्ति-व्यक्ति को विश्वास हो जाए कि हमें अपनी कृति का न्याय अवश्य मिलेगा, तो व्यक्ति हो अथवा समाज हो वह कृति में जुट जाता है। वह न्याय-दान और भी महत्त्वपूर्ण है। कृति के बिना स्थिति असम्भव है और स्थिति के बिना गति असम्भव है।

सबका आधार और महादान-ब्राह्मण अध्याय-दान से समाज को मति प्रदान करता है। यह दान सर्वोपरि है-सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते-सभी दानों में ब्रह्मदान-विद्यादान-अध्यायदान विशिष्ट है। इसी अध्यायदान से राष्ट्र की मति बनती है, राष्ट्र का मस्तिष्क बनता है। जब राष्ट्र की मति शुद्ध है, तो कृति में क्या कमी रहेगी ? जब राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति कृति में जुटा है, तो राष्ट्र की स्थिति और गति में सन्देह कहां रह जाएगा ?

कभी न समाप्त होने वाली सम्पत्ति-अय, आय, न्याय और स्वाध्याय में से स्वाध्याय ऐसी सम्पत्ति है कि चाहे जितना व्यय करो, कभी समाप्त नहीं होती। वह व्यय करने से उत्तरोत्तर बढ़ती ही है। वैश्य की आय यदि व्यय की जाए तो समाप्त हो जाएगी। क्षत्रिय का न्याय भी न्याय प्राप्त व्यक्ति के मिलने के साथ समाप्त हो जाता है, परन्तु ब्राह्मण का अध्याय जिसको दिया जाएगा, उसके पास पहुंचकर भी वृद्धि को प्राप्त होगा, स्वयं ब्राह्मण के व्यय करने से भी बढ़ेगा ही, इसलिए स्वाध्याय महादान है। क्योंकि वानप्रस्थ में पहुंचकर द्विजमात्र को अध्याय-दान करना है, अतः इसकी तैयारी स्वाध्याय द्वारा ब्राह्मणेतर वर्णों को भी करनी है, जिससे वानप्रस्थ में स्वाध्यायदान करके ब्राह्मण बनें। तत्पश्चात् सन्यास के अधिकारी हों, अतः स्वाध्याय महादान है। महाभारतकार ने भी कहा है-अध्यायधनिनोविप्राः, इसी की ध्वनि में ध्वनि मिलाकर कहना चाहेंगे-अध्यायधनिनो विप्राः, क्षत्रिया न्याय सम्पदः। वैश्या आय धनाः प्रोक्ताः, शूद्रा अयधनैर्युताः॥

6. स्वाध्याय का अधिकार

सं श्रुतेन गमेमहि,
मा श्रुतेन विराधिषि।
मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।
श्रुतम् मे मा प्रहासीः।
श्रुतात् हि प्रज्ञा उपजायते।

सुनना : महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तृतीय उद्देश्य में आर्यों का परम धर्म बताते हुए वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना ये चार आदेश लिखे हैं।

महर्षि के इस उद्देश्य में एक विशेषता है जो अन्य आचार्यों के विधान में नहीं है। अन्य आचार्यों ने स्वाध्याय और प्रवचन पर ही बल दिया है। भगवान् याज्ञवल्क्य इन्हीं दो को अत्यन्त प्रिय वस्तु मानते हैं-प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवतः। इसी प्रकार उपनिषद् का ऋषि तैत्तिरीय उपनिषद् में नवस्नातक को अन्तिम उपदेश देते समय स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करना ही विहित करता है "स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।" स्वाध्याय में सद्ग्रन्थों का अध्ययन (पढ़ना) और प्रवचन में पढ़ाना और सुनाना, महर्षि की तीन बातें तो समाविष्ट हो जाती हैं, परन्तु एक विधि (सुनना परम-धर्म) का समावेश उनमें भी नहीं हो पाता। बस, ऋषि के तृतीय उद्देश्य की यही विशेषता है कि जहां वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनाना परम धर्म है, वहां सुनना भी परम धर्म है।

बहुश्रुत-मेरा आशय यह कदापि नहीं कि प्राचीन आचार्यों ने इसे सर्वथा छोड़ दिया या इसकी ओर उनका ध्यान नहीं गया। नहीं, कदापि नहीं। ऐसा कहना तो अपनी अनभिज्ञता और उन आचार्यों के प्रति अनादर व्यक्त करना होगा। मेरे कहने का यही आशय है कि उन्होंने स्वाध्याय और प्रवचन के साथ इसे नहीं रखा। और यही महर्षि की विशेषता है कि उन्होंने सुनने को भी स्वाध्याय और प्रवचन के साथ ग्रथित कर दिया अर्थात् जहां पढ़ना-पढ़ाना और सुनाना परम धर्म था, उसमें सुनने को भी परम धर्म बना दिया। यदि प्राचीन आचार्यों ने कहीं भी इसका महत्त्व नहीं दर्शाया होता, तो बहुश्रुत शब्द का निर्माण ही कैसे हुआ होता, और महर्षि भी इसे कहां से ले पाते ? किसी को बहुश्रुत विशेषण से अलंकृत करना उसे अत्यन्त गौरवान्वित करना होता है। जहां बहुपठित विशेषण गौरव का सूचक है, वहां बहुश्रुत विशेषण और भी गौरवास्पद है। **(क्रमशः)**

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं का गहराई से चिन्तन किया। महर्षि दयानन्द ने चिन्तन किया कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए? पढ़ाने वाले कैसे हो? उनका आचरण कैसा हो? सन्तान के प्रति माता-पिता का क्या कर्त्तव्य है। इन सभी विषयों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में प्रकाश ड़ाला। महर्षि दयानन्द लिखते है कि-सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चांदी, माणिक, मोती, मूँगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा कभी सुभूषित नहीं हो सकता। क्योंकि आभूषणों के धारण कराने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु आदि का भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषणों के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है।

जिन पुरूषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि नियम पालनयुक्त, और अभिमान अपवित्रता से रहित, अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दु:खों को दूर करने से सुभूषित, वेदविहित, कर्मों से पराए उपकार करने में लगे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिए आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरूष वा स्त्री दुराचारी हों उन से शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने के योग्य हैं।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती शिक्षा आरम्भ करने से पहले कहते हैं कि द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें। विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला से दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरूष वा भृत्य अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और बालकों की पाठशाला में पुरूष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरूषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री वा पुरूष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषयकथा, परस्परक्रीडा, विषय का ध्यान, और संग, इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें। जिस से उत्तम विद्या, शिक्षा, शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा को बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे केवल आजीविका या नौकरी प्राप्त करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नहीं मानते थे किन्तु वे शिक्षा के द्वारा मनुष्य को चरित्रवान बनाना चाहते थे, शरीर और आत्मा को बलयुक्त करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास करना चाहते थे। हमारी वैदिक शिक्षा पद्धति का मुख्य उद्देश्य यह था कि विद्यार्थी के अन्दर अच्छे गुणों, अच्छे संस्कारों का समावेश हो जिससे वे मातृभक्त, पितृभक्त, और राष्ट्रभक्त बन सकें।

आज की शिक्षा पद्धति को देखकर यह प्रतीत होता है कि हम अपनी वैदिक शिक्षा पद्धति से कोसों पीछे छूट गए हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति में केवल ऐसी शिक्षा दी जाती है कि वह केवल पैसा कमाने का साधन बन सकें। शिक्षा का जो मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण करना था, उस उद्देश्य को आज की शिक्षा पद्धति में स्थान नहीं दिया जाता। वैदिक शिक्षा पद्धति को भूलने का परिणाम आज हमारे सामने है। आज समाज में जो चरित्रहीनता की घटनाएं दिखाई देती हैं वह सब इसी का परिणाम है। नशे का बढ़ना, बलात्कार जैसी अमानवीय घटनाएं घटना, भ्रष्टाचार आदि अनेक बुराईयां वैदिक शिक्षा पद्धति के अभाव के कारण हैं। अगर शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार, नैतिक मूल्यों की शिक्षा आदि दी जाए तो मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो सकता है।

हमारी वैदिक शिक्षा पद्धति में शिक्षा समाप्त करने के पश्चात युवक से जो आशा की जाती थी उसका उल्लेख करते हुए तैत्तिरीयोपनिषद में लिखा है कि- शिक्षा संस्था में अध्ययन समाप्त करने के बाद जब ब्रह्मचारी घर को लौटता है, तब आचार्य उसे उपदेश देते हुए- जिसे आजकल दीक्षान्त भाषण कहा जाता है- कहता है कि गुरू के पास तुमने जो कुछ सीखा उससे तुमसे आशा की जाती है कि तुम जीवन में सत्य का आचरण करोगे, धार्मिक जीवन बिताओगे, माता-पिता की सेवा करोगे, अपने बड़ों का सम्मान करोगे। अब विश्वविद्यालयों ने भी दीक्षान्त भाषण देते हुए उपनिषद के इन्हीं वचनों का उच्चारण करना शुरू कर दिया है। परन्तु क्या हमारी शिक्षा सचमुच ऐसे युवक तैयार कर रही है? बार-बार सिर्फ यही रटा जा रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य युवक-युवतियों को रोटी कमाने लायक बनाना है, यह तो ठीक है परन्तु शिक्षा का पहला उद्देश्य इन्सान को इन्सान बनाना है। चौदह-पन्द्रह साल जब तक विद्यार्थी स्कूलों कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करता है, हम उसे नहीं बतलाते कि जीवन क्या है, धर्म क्या है, सत्य क्या है, जीवन का लक्ष्य क्या है, कर्त्तव्य क्या है? परीक्षा पास करा लेने के बाद दीक्षान्त भाषण के समय इन उपनिषदों के वाक्यों को सुना देना शिक्षा नहीं, शिक्षा की विडम्बना है। गुरूकुल में आचार्य अपने शिष्यों को कहता था कि रोटी तो तुम कमाओगे ही, पेट तो भरोगे ही, परन्तु याद रखना जो कुछ करना इन्सान बने रहना।

शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए। जब तक विद्यार्थियों को अच्छे संस्कारों से युक्त नैतिक शिक्षा नहीं दी जाएगी तब तक शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं होगा। वर्तमान शिक्षा पद्धति के द्वारा इस उद्देश्य को पूरा नहीं किया जा सकता। अत: हम चाहते हैं कि आज की युवा पीढ़ी मातृभक्त, पितृभक्त और देशभक्त बनें तो हमें वैदिक शिक्षा पद्धति को अपनाना पड़ेगा। नैतिक मूल्यों से रहित शिक्षा आज हमारी युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रही है। इस युवा पीढ़ी को बचाना हमारा दायित्व बनता है। **-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर 128 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जालन्धर, अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 128 वां वार्षिकोत्सव 17 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। प्रात:काल स्वास्ति याग के मन्त्रों के द्वारा हवन यज्ञ किया जाएगा। रात्रिकाल के सत्संग में भजन और प्रवचन होंगे। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् श्री राजू वैज्ञानिक जी के प्रवचन तथा श्री राजेश अमर प्रेमी जी के भजन होंगे। आप सभी धर्म प्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करें। **-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज**

यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन

आर्य नगर त्यूड़ी जिला ऊना हिमाचल प्रदेश में अपने निवास पर पूज्य पिता जी स्व. श्री राम कृष्ण गौतम राष्ट्रपति पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत की पुण्य तिथि पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनांक 25 नवम्बर 2014 से 29 नवम्बर 2014 तक किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के प्रसिद्ध विद्वान्, वेदपाठी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। **-डा. विक्रमादित्य गौतम 94181-57048**

thearyasamaj.org

केरल में वेद की ज्योति जली

-ले० श्री अशोक आर्य 104-शिप्रा अपार्टमेंट कौशाम्बी

केरल में ही नहीं देश के दक्षिण भारतीय प्रान्तों की किसी भी भाषा में अब तक वेद का ऋषि भाष्य उपलब्ध नहीं था। केरल देश का प्रथम प्रांत है जिसकी भाषा मलयालम में सम्पूर्ण यजुर्वेद (ऋषि भाष्य) का दो भागों में प्रकाशन सफलतापूर्ण सम्पन्न हो गया है तथा इसके विमोचन का कार्य वहां के कालटी गांव के विशाल सभागार में सम्पन्न हुआ। इसका प्रकाशन वेद विद्या प्रतिष्ठान ने किया जब कि इस भाष्य को सफलतापूर्वक तैयार करने का कार्य पंडित परमेश्वरम् नम्बूदरी ने किया, जिनका देहांत विगत वर्षों में हुआ किन्तु अपने परलोक गमन से पूर्व वह चार वेद का भाष्य मलयालम में कर गए। यह भाष्य उनकी ही मधुर स्मृति को सदा के लिए बनाए रखने के लिए केरल के एकमात्र आर्य सन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी ने संपादित किया। इसके लोकार्पण के अवसर पर स्वामी दयानन्द पुरस्कार से आर्य जगत के शिरोमणि विद्वान, लेखक व शोधकर्त्ता प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी को ५५५५५ रुपए की राशी, शाल व ताम्रपत्र के साथ दिया गया। वेद के लोकार्पण समारोह की भी कुछ विशेषताएं अपनी ही थी यथा :

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ए. एस. आर. ओ (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष डा. जी माधवन नायर ने अपने आशीर्वचन से सबको संबोधन दिया तथा कहा कि वेद की प्राचीनता तथा आधुनिक समाज की आवश्यकता हमें दोनों को समन्वित करके चलना है। होशंगाबाद के गुरूकुल के कुलपति सामी ऋतस्पति जी ने अपने उद्बोधन में बोलते हुए कहा कि एक महिला के द्वारा एक महिला को वेद देकर केरल की जनता ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार किया है।

इस अवसर पर ट्रावन कोर कोचीन की राजमाता रानी गौरी लक्ष्मीबाई अश्वनी तिरूनाल ने कहा कि वेद व्यक्ति को न खोजे बल्कि व्यक्ति को तपस्यापूर्ण मार्ग से वेद की अन्वेषणा को जाना चाहिए। केरल की धरती पर इस समारोह को अद्वितीय बनाते हुए इस राजमाता ने एक महिला होते हुए भी वेद का विमोचन किया तथा केरल की ही एक कालरी विश्वविद्यालय की अनुसंधान विद्यार्थिनी कुमारी रेवती जी, जो एक दलित परिवार से सम्बन्धित हैं, ऐसी महिला को इस यजुर्वेद भाष्य की प्रथम प्रति भेंट की।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि केरल की जिस धरती पर जगतगुरू शंकराचार्य ने महिला के लिए वेद पढ़ने पर रोक लगाई थी, उस शंकराचार्य की जन्म स्थली के पास ही एक महिला ने वेद का विमोचन कर एक आदर्श स्थापित किया है तथा इस वेद की प्रथम प्रति भी एक महिला को और वह भी एक दलित महिला को समर्पित कर एक नया इतिहास लिखा है। इसके लिए केरल की यह संस्था बधाई की पात्र हैं। इस कार्यक्रम का संचालन प्रतिष्ठान के युवा कार्यकर्त्ता प्रशांत जी ने किया।

इस कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में वेदोच्चारण की परम्परा का आधार बनाकर सिम्पोजियम हुआ। इस स्तर में वेद मूर्ति डा. सी. एम. नीलकंठन नाम्पूतिरी, वेद मूर्ति वटक्कुम्पाठ नारायणन नम्पूतिरी, वेद मूर्ति कैमुक्कू श्रीधरण नाम्पूतिरी ने भाग लिया। वेद के प्रकृति पाठ, विक्रितिपाठ, पाठ करने की विविध शास्त्रों की विधि आदि अनेक विषयों पर वैज्ञानिक प्रकाश डाला। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष प्रोफैसर विश्वाथन नम्पूतिरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

आगामी दिन के प्रथम सत्र के अवसर पर ऋषोपरांत दयानन्द पुरस्कार के सम्बन्ध में डा. धर्मराज अटाट अध्यक्ष के पद पर आसीन हुए। इस अवसर महात्मा गांधी विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति तथा एक्स ऑफिस शो प्रिंसीपल सेक्रेटरी शास्त्र एवं सांकेति विज्ञान डा. वी. एन. राजशेखर पिल्ला ने कार्यक्रम का उदघाटन किया। केरल के श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय के कुलपति डा. दिलीप कुमार जी ने दयानन्द पुरस्कार सम्मान की राशि ५५५५५ रूपए का ड्राफ्ट प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु जी को प्रदान किया। वक्ताओं ने एक मत होकर महर्षि दयानन्द कृत उपकारों का संस्मरण किया। इस अवसर पर बोलते हुए डा. अशोक आर्य केरल वैदिक मिशन के संरक्षक (कौशाम्बी, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश) ने कहा कि वेद में तीन देवियों की आराधना का आदेश है। मातृ संस्कृति, मातृ भूमि तथा मातृ भाषा रूपी इन तीनों देवियों के स्मरण से ही देश की रक्षा संभव है।

इस दिन की द्वितीय सभा में पारिस्थितिक समस्याओं का परिहार वेद के परिप्रेक्ष्य में, विषय के आधार पर चर्चा हुई। इस चर्चा का श्री गणेश प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डा. पि. वि. विश्वनाथन नाम्पूतिरी ने किया। डा. पि. वि नारायणन एवं डा. के पि श्री देवी ने चर्चा में भाग लेते हुए अपने विचार प्रकट किए। प्रतिष्ठान के महामंत्री श्री रा. टी. रघुनाथ जी ने आए हुए सब श्रोताओं और अभ्यागत गण के प्रति आभार प्रकट किया।

महर्षि का निर्वाण दिवस मनाया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा महर्षि दयानन्द जी का 131वां निर्वाण दिवस 31 अक्तूबर दिन गुरूवार को मनाया गया साथ ही दीपावली पर्व भी मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ मुख्य यजमान श्रीमती यशोदा विग, श्री महेन्द्र पाल विग एवं श्री राजेश मरवाहा एवं अनीता मारवाहा व श्रीमती रेणू टंडन व श्री सुमित टंडन एवं श्रीमती रीटा अबरोल व श्री सुभाष अबरोल, श्री सुरेन्द्र टंडन रहे, यज्ञ के ब्रह्मा कर्मवीर शास्त्री पुरोहित आर्य समाज दाल बाजार रहे। मुख्य वक्ता स्वामी शोभानन्द जी रहे एवं श्री श्रवण बत्रा जी रहे। स्वामी शोभानन्द जी ने अपने प्रवचन में कहा कि सदियों से ढोंग, पाखंड एवं रूढियों की बुनियाद पर खड़ी पाखंड की इमारत को ऋषि वर देव दयानन्द ने युक्ति तर्क एवं प्रमाणों के प्रहारों से ध्वस्त कर विश्व के शिखर पर वैदिक धर्म की पताका को फहरा दिया। स्वामी जी ने समाज में फैली अनेक विकृतियों एवं कुरीतियों की घोर कालिमाओं को वेद ज्ञान के साबुन से साफ कर स्वच्छ कर दिया। श्री श्रवण कुमार बत्रा ने अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा ही भारत में 1857 की क्रांति का उदघोष हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा कर्मवीर शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने सदियों से अविद्या एवं अंध विश्वासों के आगोप में डूबे आर्य वर्त भारत देश को सत्य ज्ञान का उजाला देकर नई रोशनी के भास्कर सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजई ग्रंथ आर्य जाति को सौंप दिया। स्वामी जी को सत्रह बार जहर पिलाया गया। किन्तु वह स्वयं विष पीकर आर्य जाति को अमृत पिलाते रहे। वह सारे विश्व को वैदिक धर्म के ध्वज के तले देखना चाहते थे। परन्तु कुछ तथाकथित धर्मान्धों ने मिलकर एक कुलटा पिसाचनी नन्हीं जान के षडयन्त्र से जगन्नाथ द्वारा कांच का चूरा मिलाकर जहर पिला दिया। जब सारा संसार दीपावली मना रहा था तब वह हजारों चिरागों को जलाने वाला दीया सदा के लिए बुझ गया।

कितना हैरत अंगेज मंजर था जमाने के लिए
मौत मीठी नींद आई थी सुलाने के लिए
जमा है अहबाब और सब को कफन की फिक्र है
मरने वालो को मगर अब भी वतन की फिक्र है।

कार्यक्रम को अपने भजनों से महर्षि दयानन्द के बलिदान की याद ताजा करने वालों ने श्री राजेन्द्र बत्रा, जगदीश नारंग, बाला गंभीर, सुभाष अबरोल विशेष सहयोगी वरिष्ठ उपप्रधान देवपाल आर्य प्रधान आत्म प्रकाश जी, अरूण सूद, संजीव चड्ढा, रमाकांत महाजन, वेद प्रिय चावला, कुलदीप राय, चरणजीत पाहवा, के. सी. पासी, ओम प्रकाश गुप्ता आदि कार्यक्रम के उपरान्त जलपान की व्यवस्था की गई।

-प्रधान आत्मप्रकाश

thearyasamaj.org

ईश्वर सर्वव्यापक होने से सदा अवतरित है, उसे अवतार की न आवश्यकता है और न वह अवतार ले सकता है

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला देहरादून

ईश्वर का अवतार होता है या नहीं ? विचारणीय प्रश्न है। हमारे पौराणिक बन्धु जो स्वयं को सनातन धर्मी कहते हैं, ईश्वर का अवतार होना मानते हैं और राम, कृष्ण आदि अनेक महापुरुषों को ईश्वर का अवतार ही नहीं मानते अपितु उनकी मूर्तिया बनाकर उन्हें पौराणिक विधि व रीति से पूजते भी हैं। पहली बात तो यह कि ईश्वर का अवतार ही विवादास्पद है, फिर बिना किसी प्रमाण व प्रबल तर्क व युक्ति के उन ऐतिहासिक महापुरुषों की मूर्ति बनाकर पूजा करना आज के वैज्ञानिक युग में उचित नहीं ठहरता क्योंकि मूर्ति के गुण उस सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान के गुणों के सर्वथा विपरीत हैं। आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित ऐसा संगठन है जो वेदों को तर्क व ज्ञान, बुद्धि व युक्ति की कसौटी पर खरा उतरने के कारण ईश्वर से प्राप्त सत्य ज्ञान की पुस्तकें मानता है। वैदिक ज्ञान एवं युक्ति व प्रमाणों से आर्य समाज ईश्वर के अवतार की मान्यता को कपोल कल्पित, अज्ञानता व पाखण्ड तथा अन्धविश्वास मानता है तथा अपनी मान्यताओं तथा कथ्यों को वेदों से सिद्ध भी करता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल 1825-1883 में पौराणिक मतावलम्बियों से मूर्ति पूजा, अवतारवाद आदि अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किये परन्तु हमारे पौराणिक भाई अपनी मूर्ति पूजा व अवतारवाद आदि अवैदिक मान्यताओं को वेद विहित या युक्ति आदि प्रमाणों से सत्य सिद्ध नहीं कर सके। जब विगत 145 वर्षों से सिद्ध नहीं कर सके तो भविष्य में भी नहीं कर सकते जिसका कारण झूठ के पैर न होना है। झूठ को विद्वानों से स्वीकार नहीं कराया जा सकता। इसे तो अन्धी श्रद्धा से पूर्ण तथा ज्ञान के नेत्रों से हीन व्यक्तियों द्वारा ही स्वीकार कराया जा सकता है।

विचार करने पर सनातन मत कहलाने वाले बन्धु व सनातन वैदिक धर्मी आर्य समाजी भी ईश्वर को सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी स्वरूप वाला होना स्वीकार करते हैं। इसका अर्थ हुआ कि वह इस ब्रह्माण्ड में सब जगहों व स्थानों पर, यहां तक की हमारी जीवात्मा के भीतर भी सृष्टिकर्त्ता ईश्वर व्यापक है। जब वह आकाश, पाताल, धरती व आकाश व संसार के कण-कण में सब जगह सब समय में पहले से ही मौजूद व उपस्थित हैं तो फिर वह मनुष्य रूप धारण करता है, यह मानना अज्ञानता पूर्ण ही कहा जा सकता है। जब वह ईश्वर इस ब्रह्माण्ड का निर्माण, इसका संचालन व प्राणी जगत का सृजन व उत्पत्ति तथा वेदों व भाषा का ज्ञान आदि देने के साथ वर्तमान में भी सभी प्राणियों के भीतर निरन्तर शुभ प्रेरणाएं दे रहा है तो फिर उसे अवतार लेने की आवश्यकता को मानना अपनी अज्ञानता को सिद्ध करने के साथ ईश्वर से स्वरूप को भली प्रकार से न समझना ही कहा जा सकता है।

कहा जाता है कि दुष्टों के दमन के लिए ईश्वर अवतार लेता है। उदाहरण के रूप में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को लिया जाता और कहा जाता है कि रावण के वध के लिए ईश्वर को अर्थात् राम को अवतार लेना पड़ा। अब यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या ईश्वर बिना अवतार लिए रावण को मार सकता था या नहीं ? यदि नहीं मार सकता था तो यह तर्क स्वीकार किया जा सकता है। आईए, इस तर्क की पड़ताल करते हैं। इस ब्रह्माण्ड को बने हुए 1.96 अरब वर्ष हो चुके हैं। इस अवधि में गणनातीत या असंख्य मनुष्य आदि उत्पन्न हुए व मरे भी। क्या वह बिना ईश्वर के प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रेरणा व मर्जी से मर गये या वह सब ईश्वर की प्रेरणा व मर्जी व उसके प्रताप व प्रयत्नों से ही मरे हैं, इसका उत्तर यह है कि सबकी मृत्यु का कारण ईश्वर ही है जिस प्रकार से जन्म का कारण ईश्वर है। जब सब प्राणियों के जन्म का कारण ईश्वर का निराकार व अजन्मा व अनावतार स्वरूप है तो रावण हो या राम, कृष्ण जी हों या अर्जुन, युधिष्ठिर, कंस या दुर्योधन आदि, सबकी मृत्यु का कारण निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी ईश्वर ही सिद्ध होता है। रावण जैसे या रावण से भी बलवान, दुष्ट और अन्यायकारी मनुष्य व राक्षस को मारने के लिए ईश्वर को अवतार की कोई आवश्यकता नहीं है। आजकल रोज बड़े-बड़े आतंकवादी और धर्मात्मा भी मर रहे हैं, उन्हें किसी अवतार द्वारा नहीं अपितु निराकार ईश्वर द्वारा ही अनावतार स्वरूप से धराशायी किया जा रहा है। वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह केवल संकल्प से ही इस सारे संसार को बनाता व चलाता है तो इस महद कार्य की तुलना में रावण आदि अन्यायकारियों को मारना तो अति तुच्छ कार्य है, अत: अवतारवाद की कल्पना व मान्यता तर्क, युक्ति व शास्त्रीय प्रमाणों से हीन होने के कारण असिद्ध, पाखण्ड व अन्ध विश्वास ही है।

ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी तथा सर्वशक्तिमान है, अत: उसे किसी भी छोटे या बड़े से बड़े प्राणी को मारने के लिए अवतार लेने के लिए अवतार की कदापि आवश्यकता नहीं है। हम यह भी कहा चाहते हैं कि रावण, कंस व दुर्योधन ने जो बुरे कार्य किए, वह अपनी जवानी के बाद के वर्षों में किये थे जबकि मर्यादा पुरूषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण जी का जन्म अन्यायकारियों व दुष्टों का वध व हत्या करने से लगभग 25 से 80 वर्ष पूर्व हो चुका था। इस प्रसंग में श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण ले सकते हैं जिन्होंने रावण का संहार किया। रामायण का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि रावण की आयु राम से अधिक थी। इसका कारण राम व रावण का जब युद्ध हुआ, उस समय राम नि:सन्तान थे और रावण का पुत्र इन्द्रजीत या मेघनाथ प्रसिद्ध है। अत: राम व रावण की आयु में लगभग 25 से 40 वर्ष तक का अन्तर तो रहा ही है। राम ने रावण से युद्ध को टालने के लिए सभी सम्भव प्रयास किये। पहले हनुमान जी लंका गये और उसके बाद बाली के पुत्र अंगद को रावण को समझाने व सीता जी को लौटाने के लिए प्रयास करने के लिए भेजा गया जिससे कि अनावश्यक युद्ध को टाला जा सके। जब यह सम्भव न हुआ तो युद्ध हुआ जिसका परिणाम रावण का वध व जीवानान्त हुआ। इस घटना से पता चलता है कि यह घटना राम के जन्म व अवतार लेने के 25 से 40 वर्ष बाद घटी थी। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि रावण के बुरे कर्मों से लगभग 25 से 40 वर्ष पूर्व ही ईश्वर अर्थात् श्री राम ने रावण को मारने के लिए अवतार ले लिया था जबकि उसकी कोई आवश्यकता थी ही नहीं। ऐसा मानना बुद्धिसंगत नहीं है और इससे यह सिद्ध होता है कि राम ईश्वर के अवतार नहीं है। ईश्वर का रामचन्द्र जी के रूप में अवतार लेना तब उचित होता जब यह निश्चित होता कि इस दुष्ट रावण का वध करना आवश्यक व अपरिहार्य है और वह बिना अवतार के नहीं हो सकता था। यह स्थिति तो सीता हरण के बाद अंगद के प्रस्ताव को ठुकरा देने पर उत्पन्न हुई थी। इससे 25-40 वर्ष पूर्व ही श्री राम चन्द्र जी का जन्म हो चुका था जिसे अवतार कदापित नहीं कहा जा सकता। अब यदि राम अवतार थे और उन्होंने अपने अवतार लेने के उद्देश्य को रावण को मार कर पूरा कर लिया था तो फिर वह अनेक वर्षों तक जीवित क्यों रहे ? उद्देश्य व काम पूरा कर लेने के बाद वर्षों तक वही जमें रहना औचित्य पूर्ण नहीं माना जा सकता। क्यों नहीं उन्होंने सीता जी सहित कौशल्या आदि माताओं व लक्ष्मण सहित अपने सभी भाईयों को अपने ईश्वर का अवतार होने की बात कह कर अपने मूल निराकार व सर्वव्यापक स्वरूप को धारण कर लिया ?

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (बृहदारणयक उपनिषद्)

ले० डा. सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चंद वर्मा फाजिलका

हृदय का अर्थ-अभी हमने प्रजापति तथा उसकी सन्तति की वार्ता पर ध्यान दिया। आओ अब चिन्तन करे कि वह प्रजापति क्या है ? उपनिषद् का इस विषय में वचन है कि हृदय ही प्रजापति है।

''एष प्रजापतिर्यद्हृदयम् एतद्ब्रह्मैतत्सर्व तदेतत्त्रयक्षरःहृदयमिति''

बृहदारणयक उप. (5/3/1)

अपने हृदय की ही तीन सन्तानें हैं। देव मनुष्य और असुर। यह तीनों अक्षर का हृदय ही प्रजापति है। हृदय ही ब्रह्म है। 'ह्'-हञ्-हरणे धातु से निर्मित है जिसका अर्थ है-अभिहरण-लाना। हृदय ही प्रजापति है, हृदय ही ब्रह्म है, उसके सामने अपने पराए सब उपहार अभिहरण कर अर्थात् ला-ला कर रखते हैं।

दूसरा अक्षर 'द'-दा दाने धातु से बना है अर्थात देना। हृदय ही प्रजापति है, हृदय ही ब्रह्म है, उसे सब देते हैं। तीसरा अक्षर 'य' इण गतौ धातु से बना है जिसका अर्थ है जाना। हृदय ही प्रजापति, हृदय ही ब्रह्म है, जो उसे जान लेता है वही स्वर्ग लोक को जाता है।

इस प्रकार 'ह्' जो लाता है, 'द' देता है 'य' चलता है-जाता है। यास्काचार्य निरूक्त में हृदय की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते हैं हृदय को हृदय इसलिए कहा जाता है कि यह तीन कार्य करता है-ह से हरति 'द' से ददाति 'य' से याति-अर्थात् लेता है, देता है, और चलता है।

हृदय शरीर से अशुद्ध रूधिर को लेकर फेफड़ों द्वारा शुद्ध करके शरीर को देता है और इसी उद्देश्य से सदा गतिशील रहता है। इस प्रकार हृदय का ज्ञान तो हमें कम से कम उपनिषद काल से ही सिद्ध होता है। जब कि योरोपवासियों ने जो हमारे इस ज्ञान से अनभिज्ञ थे उन्होंने 'हृदय' के अविष्कार का श्रेय हार्वे, 17वीं शताब्दी (1578-1657) को देते हैं। इसी प्रकार विज्ञान का विषय तो भारत में प्राचीन काल से ही ज्ञात था। उस समय की विज्ञान की उपलब्धियां अपनी उत्कृष्ट सीमा पर थी जिन्हें आज तक आधुनिक विज्ञान छू भी नहीं पाया है। रामायण काल के पुष्पक विमान, महाभारत काल में तीर अथवा अन्य यन्त्रों से पृथ्वी से जल निकालने की क्षमता, युद्ध के समय रातों रात घायलों को प्रातः काल तक स्वस्थ कर युद्ध के लिए तैयार कर देना आदि। परन्तु विडम्बना इस बात की कि अब भी हमें विद्यालयों की पुस्तकों में यही ज्ञान दिया जाता है कि विज्ञान तो पाश्चात्य देशों की ही देन है। भारतवासी तो सपेरे जादू टोने वाले एवं गडरियों के गीत गाने वाली ही नागरिक थे।

सत्य ब्रह्म-इसी उपनिषद के पंचम अध्याय के चौथे ब्राह्मण में सत्य ब्रह्म के बारे में ज्ञान दिया गया है। उपनिषदकार कहता है कि ये जो हृदय है उसी में आकर सत्य बैठा है। यह सत्य ही ब्रह्म है। यह सत्य ब्रह्म महान है, पूजनीय है सबसे पहले प्रकट होता है। जो प्राणी मात्र के हृदय में निवास करने वाले सत्य ब्रह्म को जान लेता है वही इन लोकों को जीत लेता है। जो इसे असत् मानता है, वह पराजित हो जाता है। अर्थात हमारे हृदय स्थल, हृदय शरीर में सत्य को स्थापित मानता है वही सत्यब्रह्म को स्वीकार करता है वही उसके बारे में जान पाता है।

सत्य ब्रह्म है, सत्य ही ब्रह्म है, अर्थात सत्य ही ब्रह्म है ब्रह्म ही सत्य है।

''सत्य ब्रह्मोति सत्यं ह्येव ब्रह्म''

सत्य-स-त्-य इन तीनों अक्षरों में स और य दोनों स्वर है और इनके मध्य में त्-स्वरहीन। स-स्वर सत्य है अविनाशी है, स्वर हीन अनृत है विनाशी है।

यह 'त्' दोनों ओर से स और य रूपी सतय से जकड़ा हुआ है अर्थात् यह अनृतारूपी प्रकृति सत्य रूप ब्रह्म और जीवन से जकड़ी हुई है। क्योंकि सत्य ने दोनों तरफ से इसे जकड़ रखा है। इसलिए यह अनृत होते हुए भी सत्य रूप ही रही है। जो इस रहस्य को जान लेता है 'अनृत' उसे नहीं मार सकता।

उपनिषद् कहती है कि सृष्टि के प्रारम्भ में 'आप' ही थे। आप अर्थात् सर्वत्र व्यापक हो रही अव्यक्त प्रकृति। प्रकृति जब अव्यक्त से व्यक्त अवस्था में आने लगी तब सत्य प्रकट हुआ। सत्य के प्रकट होने पर ब्रह्म प्रकट हुआ। जब तक सत्य रूप विश्व के नियम, अव्यक्त जगत को व्यक्त करने के लिए क्रियाशील नहीं होते तब तक वह ब्रह्म भी अव्यक्त रहता है और जैसे ही सत्य अर्थात् प्रजापति से विश्व का निर्माण एवं प्रजाओं का पालन पोषण होने लगा। प्रजापति के प्रकट होने पर देव प्रकट हुए अर्थात् दिव्यगुणों की स्थापना इन दिव्य गुणों का प्रारम्भ 'सत्य' से ही है। अतः देव सत्य की ही उपासना करते हैं। क्योंकि सत्य की शक्ति ही सब दिव्य गुणों को दिव्य गुण बनाती है।

इसी ब्रह्म के विषय में उपनिषद् कहती है कि सत्य की आभा के लिए वह विराट पुरूष मनोमय है। मनन चिन्तन स्वरूप है। वही हृदय में है। हृदय छोटा है मानो ब्रीहि या यव अर्थात धान अथवा जौं के दाने के समान सूक्ष्म है। यहां हृदय से तात्पर्य मन से है। इस क्षुद्र हृदय में रहता हुआ वह विराट मनोमय पुरूष सबका स्वामी है, सबका अधिपति है, सबका अधिष्टाता है अर्थात् जो कुछ है उस सब पर वह शासन कर रहा है।

पृष्ठ 5 का शेष- ईश्वर सर्वव्यापक.....

उसके बाद वह अनेक वर्षों तक जीवित रहे और वैदिक व्यवस्था के अनुसार राज्य किया। इन सबको जानने व समझने पर सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर का श्री रामचन्द्र जी के रूप में अवतार लेना असत्य सिद्ध होता है।

यही स्थिति योगेश्वर श्री कृष्ण जी व अन्य अवतारों के जीवन व कार्यों पर विचार करने पर भी सामने आती है। अतः ईश्वर का अवतार नहीं होता और न ही हमारे आदर्श व आदारास्पद श्री राम व श्री कृष्ण की संस्कृति व विरासत का पोषण किया, उसे पुनर्जीवित, पल्लवित व पोषित किया।

वेदादि शास्त्रों में ईश्वर को अजन्मा व अमर कहा है। अजन्मा व्यक्ति जन्म नहीं लेता और लेगा तो यह उसके स्वाभाविक गुण के विपरीत होगा जिससे उसकी सत्ता पर ही प्रश्न चिन्ह लग जाएगा ? सर्वशक्तिमान सत्ता का धनी ईश्वर अपने संकल्प मात्र से जो करना होता है, करता है। बड़े से बड़ा आततायी, दुष्ट, अन्यायी का अन्त करना बिना अवतार के ही उसके लिए अति सरल व सम्भव है। उसने अपने बारे में मनुष्यों को जानने योग्य पूर्ण ज्ञान वेदों में दे दिया है। ज्ञानी लोग वेद से और अल्प ज्ञानी लोग वेदों के अनुकूल व अनुरूप वैदिक साहित्य से ईश्वर के बारे में आवश्यकतानुसार जान कर अपने जीवन का कल्याण कर सकते है। हमें लगता है कि यह कहना कि ईश्वर अवतार लेता है या ईश्वर ने कभी अवतार लिया था, उसको एक प्रकार से अपमानित करना है। इसलिए कि वह वो कार्य जो अवतार लेकर करता है अन्यथा नहीं कर सकता, इससे उसकी सर्वशक्तिमत्ता का गुण लांछित होता है। हम आशा करते हैं कि प्रबुद्ध पाठक हमारे विचारों से पूर्ण रूप से सहमत होंगे। इस लेख से यह ज्ञात होता है कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम व योगेश्वर श्री कृष्ण अपने समय के महान पुरूष थे। इन्हें गुणों की खान, ऐश्वर्यशाली व महिमावान होने के कारण भगवान तो कहा जा सकता है परन्तु वह सर्वव्यापक ईश्वर से भिन्न एक सत्ता ''जीवात्मा'' ही थे। यह बात वेदादि सदग्रन्थों के स्वाध्याय, विज्ञान, तर्कबुद्धि, विवेक व स्वार्थहीन होकर ही जानी जा सकती है।

thearyasamaj.org

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर में त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्मदिवस मनाया गया

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर द्वारा त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्मदिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक दिनांक 27-10-2014 से 2-11-2014 तक मनाया गया जिसमें पं. विजय कुमार शास्त्री जी के उपदेश तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन हुए। दिनांक 2-11-2014 को सुबह 10 बजे शान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में सम्मेलन किया गया जिसमें लाला गंगाराम जी को श्री कमल किशोर, श्री सरदारी लाल उप्रपधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री भगत चूनी लाल कैबिनेट मन्त्री पंजाब सरकार व श्री चौधरी सन्तोष सिंह एम.पी. ने अपने-अपने विचारों द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किए। कार्यक्रम के पश्चात लंगर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज गढ़ा, बस्ती दानिशमंदा, बस्ती बावा खेल, गांधी नगर-1, गांधी नगर-2, संत नगर, कबीर नगर के अधिकारियों द्वारा पूरा समर्थन दिया गया। आर्य समाज भार्गव नगर के सभी अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया। **-सुदेश आर्य महामन्त्री आर्य समाज**

आर्य समाज जीरा में ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया

दिनांक 23.10.14 को आर्य समाज जीरा में दीपावली का पर्व ऋषि निर्वाण दिवस के रूप में प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें सभी आर्य परिवारों ने बच्चों सहित आर्य समाज में पहुंच कर कार्यक्रम की रौनक को बढ़ाया।

इस कार्यक्रम में सबसे पहले हमारे सुयोग्य पुरोहित पंडित श्री किशोर कुणाल जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज जीरा ने तीन यज्ञमानों को बिठा कर बड़ी विधिपूर्वक बृहदयज्ञ करवाया। उसके पश्चात् पंडित जी ने बड़े सुन्दर ढंग से दीपावली और आर्य समाज के विषय पर अपने विचार रखे। उसके पश्चात् आर्य समाज जीरा के वृद्ध सदस्य श्री ओम प्रकाश जी ग्रोवर ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर बड़े प्रभावशाली ढंग से रौशनी डाली तथा पंडित सत्यपाल जी पथिक द्वारा लिखित व आर्य मर्यादा पर छापी कविता लो फिर दीवाली आ गई सुना कर सब का मन मोह लिया।

अंत में पंडित जी ने आए हुए सभी आर्यों को आशीर्वाद दिया तथा शान्ति पाठ के बाद, सबको अपने कर कमलों, फल व मिठाई, प्रसाद के रूप में दी तथा आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया।

-सुभाष चन्द्र आर्य प्रधान आर्य समाज

आर्य स्कूल लुधियाना की तीन ब्रांचों में दीवाली का त्योहार एवं ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

दिनांक 22.10.2014 को आर्य स्कूल लुधियाना की तीनों ब्रांचों में दीवाली का त्योहार एवं ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दीवाली के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ करवाया गया। स्कूल के सभी विद्यार्थीयों ने कमरों की सफाई की और उनको सजाया गया। इस अवसर पर मैनेजमेंट कमेटी के सभी सदस्य शामिल हुए और स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने दीपावली के शुभ अवसर पर बच्चों को पटाखें न चलाने की प्रेरणा दी एवं महाऋषि दयानन्द जी के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस दिन एक दीया बुझा और करोड़ों दीयों को रोशनी दे गया। इसी सम्बन्ध में बोलते हुए आर्य स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजयपाल दयौड़ा जी ने बच्चों को दीवाली की शुभ कामनाएं दीं। इस अवसर पर आर्य स्कूल के इंचार्ज श्री राकेश जी और वृन्दावन स्कूल के इंचार्ज श्रीमती अनुबाला जी और स्कूल का सारा स्टाफ उपस्थित हुआ। इस अवसर पर मुख्य तौर पर आर्य स्कूल के प्रधान श्री मनीश मदान जी भी शामिल हुए। **-प्रिंसीपल**

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का 65वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का वार्षिकोत्सव 17 नवम्बर 2014 से 23 नवम्बर 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। 16 नवम्बर रविवार से प्रभातफेरियां निकाली जा रही हैं। इस वार्षिकोत्सव में आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य शिवदत्त जी पाण्डेय के प्रवचन तथा श्री कुलदीप भास्कर जी तथा श्रीमती रश्मि जी घई के मधुर भजन होंगे। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ किया जाएगा। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-अजय महाजन मन्त्री आर्य समाज

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीवाली पर विशेष हवन यज्ञ का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में ऋषि निर्वाण दिवस पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल की कमेटी के मैम्बर्स, स्कूल का स्टाफ व सभी कक्षाओं के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। हवन यज्ञ पूजनीय योगराज जी शास्त्री ने बड़ी श्रद्धा के साथ करवाया और बच्चों को यज्ञ के बारे में बड़ी शिक्षाप्रद बातें बताईं और सबको आशीर्वाद दिया। हवन के पश्चात् दीवाली का प्रोग्राम बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसकी शुरूआत गायत्री मन्त्र से की गई। गायत्री मन्त्र के पश्चात् दसवीं कक्षा की मुस्कान धवन ने स्वामी दयानन्द जी की प्रशंसा करते हुए एक गीत गाया जो कि इस प्रकार था "ऐ देव दयानन्द देख लिया तेरे कारण जन-जन को" फिर इसके पश्चात् इसी कक्षा की भावना ने भी दीपाली के उपलक्ष्य में दीवाली मनाए सुहानी मेरे साईं के हाथों में जादू का पानी। फिर छोटे-छोटे बच्चों ने दीवाली पर अपनी-अपनी कविता अपने-अपने ढंग से डांस करके सुनाई जिस पर सबने खूब तालियां बजाई। इसके पश्चात् दसवीं कक्षा की काजल ने आर्य समाज के दस नियम सबको सुनाए। आठवीं कक्षा की तनवीर ने ऋषि दयानन्द जी के गुणगान बड़ी सुन्दर शैली में किए। स्टेज संचालन कुमारी मुस्कान ने किया। यह सारा प्रोग्राम तैयार करवाने का श्रेय मैडम इन्दू और मैडम ज्योति को जाता है। इस अवसर पर मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर्स भी उपस्थित थे जिनके नाम निम्न हैं।

स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री सतपाल नारंग जी, श्री सुरिन्द्र जी, माता जनक जी, श्री रमाकान्त जी, श्री हर्ष आर्य जी इसके पश्चात् श्री सन्त कुमार जी ने बच्चों को दीवाली का महत्त्व समझाते हुए कहा कि इस दिन श्री रामचन्द्र जी चौदह वर्ष का बनवास काट कर अयोध्या वापिस आए थे। उन्होंने बताया कि आज जो नारी जाति शिक्षा ग्रहण कर रही है और वेदों का मंत्रोच्चारण कर रही है वह सब ऋषि दयानन्द जी की ही देन है। स्वामी जी से पहले समाज में इतनी बुराईयां फैली हुई थीं कि कुछ कहा नहीं जा सकता। परन्तु स्वामी जी ने इस सब कुरीतियों को जड़ से उखाड़ कर नव जीवन का संचार किया फिर उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए अपने जीवन में सदा सच बोलने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इसके पश्चात् स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने भी बच्चों को दीवाली की मुबारकबाद दी और ऋषि निर्वाण दिवस के बारे में समझाया कि ऋषि दयानन्द जी ने अपने जीवन में सादा जीवन उच्च विचारों पर जोर दिया और गरीबों की सेवा का संदेश दिया। इस अवसर पर स्कूल में Writing प्रतियोगिता और दीया मेकिंग प्रतियोगिता करवाई गई फिर इनमें फर्स्ट, सैकिण्ड, थर्ड आने वालों बच्चों को ईनाम दिए गए। दीवाली की खुशी में बच्चों के लिए खाने-पीने का अति उत्तम प्रबन्ध था। फिर स्कूल के सब अध्यापकों को दीवाली के गिफ्टस देकर और जलपान करवा कर सारा प्रोग्राम समाप्त हुआ। **-रेनू बहल**

वेद प्रचार सप्ताह एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौक पटियाला द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ दिनांक 17 नवम्बर से 23 नवम्बर 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दर नगर हिमाचल प्रदेश के प्रवचन तथा पं. सतीश सुमन एवं पं. राजेन्द्र आर्य के भजन होंगे। कार्यक्रम प्रात: 8:30 से 11:00 बजे तक तथा सायं 8:00 से 10:00 बजे तक होंगे। इस अवसर पर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पुण्य लाभ प्राप्त करें। **-राज कुमार सिंगला प्रधान आर्य समाज**

वार्षिकोत्सव का आमन्त्रण

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 27 नवम्बर 30 नवम्बर 2014 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है, जिसमें मंगल यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा पं. बाल कृष्ण शास्त्री (पुरोहित) होंगे। आर्य जगत के उच्चकोटि के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. देव शर्मा जी वेदालंकार दिल्ली के प्रवचन एवं श्री उपेन्द्र जी भजनोपदेशक (चण्ड़ीगढ)के मनोहर भजन होंगे। समय प्रात: 7:30 से 9:30 एवं रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक रहेगा। समापन समारोह 30 नवम्बर 2014 रविवार को प्रात: 8:30 से 9:00 बजे तक होगा। सभी से प्रार्थना है कि परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर धर्म लाभ उठावें।

-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज

वेदवाणी

हम अबोध बालकों की सदा रक्षा करो

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

-ऋ० १/१/९

विनय-संसार में जिनके द्वारा हमारा जन्म होता है उन्हें हम पिता कहते हैं, और भी जो वृद्ध पुरूष, गुरू आदि होते हैं वे भी हमारा उत्कृष्ट पालन करने वाले होने से पिता कहलाते हैं, परन्तु हे अग्ने! हम सभी को कभी न कभी अनुभव हो जाता है कि हमारे असली पालक पिता तो एकमात्र तुम्हीं हो। एक समय आता है कि जब सांसारिक पिता भी वैसे ही रोते खड़े रह जाते हैं और हमारी पालना, रक्षा नहीं कर सकते। सचमुच संसार के वासी हम सब-सांसारिक पिता व पुत्र सबके सब तेरे एक समान पुत्र हैं। हे हम सबके पितः! हे परमपितः! जब हम सब तेरे पुत्र हैं तब हमारी आप तक सदा पहुंच क्यों नहीं होती ? पुत्र का तो यह अधिकार है कि वह जब चाहे पिता के पास पहुंच सके। जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकने वाला है ही नहीं, हमारा दुखड़ा सुन सकने वाला है ही नहीं, तो हे पितः! हम और कहां जाएं ? तू तो हमारे लिए 'सु उपायन' रह, सुगमता से पहुंच सकने वाला है। हे एकमात्र पितः! हम जिस समय चाहें, जिस स्थान पर चाहें तुझे मिल सकें-अपना दुख सुना सकें-अपनी बाल कामनाएं पूरी करा सकें। हम बच्चों की तुमसे यही प्रार्थना है, यही याचना है।

हमारा कल्याण किसमें है, यह भी हम अबोध बालक क्या जानें। जो हमें अकल्याण दिखाई देता है पीछे पता लगता है कि वही हमारा कल्याण था। हे पितः! तुम्हीं जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। बस, तुम्हीं हमारी स्वस्ति के लिए, कल्याण के लिए हमें-अपने बच्चों को सेवित करो, पालो-पोसो। हम तुम्हारे बच्चे हैं। हम तुम्हारे बच्चे हैं।

साभार-वैदिक विनय

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक हवन यज्ञ

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक हवन यज्ञ एवं सत्संग बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया गया जिसमें मुख्य यजमान मुम्बई से पधारी श्रीमती जनक शर्मा एवं स्वर्ण शर्मा सपत्नीक ने हवन यज्ञ में आहुतियां अर्पित की। इसके पश्चात आर्य समाज की भजन गायिका सोनू भारती ने कहीं समां गुजर न जाए, हाथ मलते-मलते भजन सुनाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इसके उपरान्त श्रीमती उमा शुक्ला ने भी श्वासों का क्या भरोसा, आए या न आए भजन सुनाकर सभी का मन मोह लिया। आर्य समाज के सुयोग्य मन्त्री रणजीत आर्य ने मुम्बई से पधारी विशेष अतिथि श्रीमती जनक शर्मा को विशेष सम्मान से सम्मानित किया एवं रणजीत आर्य ने बताया कि आज हम सब अपने आपको बड़ा गौरवान्वित कर रहे हैं क्योंकि श्रीमती जी महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज मुम्बई से पधारी है। इसके बाद शिवा शास्त्री ने बताया कि धर्म से कमाया हुआ धन सुख एवं यश को बढ़ाता है। हर्षपाल लखन जी ने मंच संचालन करते हुए समाज में पधारे रमेश मुटरेजा जी, चौ. हरिचन्द, अश्विनी डोगरा, बैजनाथ जी, पवन शुक्ला, विनोद तिवारी, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्य, ललित कुमार कालिया, ओम प्रकाश मैहता, पूनम मैहता, लवलीन कुमार, राजीव शर्मा, राजेन्द्र शर्मा संगीता मल्हौत्रा, सुनील मल्होत्रा, सुनील मिश्रा, संगीता तिवारी, नीलम देवी, दिव्या आर्या, अनु आर्या, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, तिलक राज, राजीव कुन्द्रा, मनु आर्या, साजन कुमार, पूजा तिवारी, रितिक तिवारी आदि का आभार प्रकट किया।

-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।